पुंज ४

समेकित बाल विकास सेवाएँ

गृहभेंट योजना

	नाम	कोड
जिला		
आई.सी.डी.एस परियोजना (ब्लॉक)		
सैक्टर		
ग्राम/वार्ड		
आँगनवाड़ी केन्द्र		
आँगनवाड़ी कार्यकर्ता		
आँगनवाड़ी सहायिका		

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय
भारत सरकार

खण्ड 1 : गृहभ्रमण योजना रिकॉर्ड – गर्भावस्था से शिशु के 24 माह होने तक

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
परिवार एवं व्यक्ति का क्रमांक	माता एवं बच्चे का नाम	**गर्भावस्था 4–6 माह तक** (कितने भी सम्पर्क पर्याप्त हैं–कम से कम दो बार)	**गर्भावस्था 7–9 माह तक** (कम से कम 2 गृहभ्रमण)	**प्रसव के दिन** (प्रसव के समय उपस्थिति या प्रसव के बाद जल्द–से–जल्द गृहभ्रमण)	**जन्म के बाद पहला सप्ताह 1–7 दिन** (कम से कम 2 गृहभ्रमण, 2 से ज्यादा गृहभ्रमण, यदि शिशु का जन्म वजन कम हो)	**जन्म के बाद पहला माह 8–30 दिन** (कम से कम 3 गृहभ्रमण, ज्यादा गृहभ्रमण, यदि शिशु का जन्म वजन कम हो)	**शिशु 1–5 माह तक** (कितने भी सम्पर्क पर्याप्त हैं–हो सके तो दो से तीन बार)	**शिशु 6–8 माह तक** (हर माह 1 गृहभ्रमण, यदि आवश्यक हो तो अधिक बार)	**शिशु 9–11 माह तक** (1–2 गृहभ्रमण)	**शिशु 12–17 माह तक** (1–2 गृहभ्रमण)	**शिशु 18–24 माह तक** (कितनी भी सम्पर्क पर्याप्त हैं–दो से तीन बार)
परिवार संख्या	*कैलेण्डर माह*										
परिवार में क्रम सं.	माता का नाम										
	प्रसव की संभावित तिथि										
	प्रसव की तिथि										
परिवार में क्रम सं.	बच्चे का नाम										
परिवार संख्या	*कैलेण्डर माह*										
परिवार में क्रम सं.	माता का नाम										
	प्रसव की संभावित तिथि										
	प्रसव की तिथि										
परिवार में क्रम सं.	बच्चे का नाम										
परिवार संख्या	*कैलेण्डर माह*										
परिवार में क्रम सं.	माता का नाम										
	प्रसव की संभावित तिथि										
	प्रसव की तिथि										
परिवार में क्रम सं.	बच्चे का नाम										
परिवार संख्या	*कैलेण्डर माह*										
परिवार में क्रम सं.	माता का नाम										
	प्रसव की संभावित तिथि										
	प्रसव की तिथि										
परिवार में क्रम सं.	बच्चे का नाम										
परिवार संख्या	*कैलेण्डर माह*										
परिवार में क्रम सं.	माता का नाम										
	प्रसव की संभावित तिथि										
	प्रसव की तिथि										
परिवार में क्रम सं.	बच्चे का नाम										
परिवार संख्या	*कैलेण्डर माह*										
परिवार में क्रम सं.	माता का नाम										
	प्रसव की संभावित तिथि										
	प्रसव की तिथि										
परिवार में क्रम सं.	बच्चे का नाम										

खण्ड 2 : अत्यंत कम वजन वाले बच्चों के लिए – गृहभ्रमण योजना रिकॉर्ड

1	2	3	4	5	6	7	8
परिवार एवं शिशु का क्रमांक	बच्चे का नाम	सम्पर्क 1	सम्पर्क 2	सम्पर्क 3	सम्पर्क 4	सम्पर्क 5	सम्पर्क 6
	वजन/पोषण स्थिति						
परिवार संख्या परिवार में क्रम सं.	नाम पहली बार पहचान की तिथि आयु						
	वजन/पोषण स्थिति						
परिवार संख्या परिवार में क्रम सं.	नाम पहली बार पहचान की तिथि आयु						
	वजन/पोषण स्थिति						
परिवार संख्या परिवार में क्रम सं.	नाम पहली बार पहचान की तिथि आयु						
	वजन/पोषण स्थिति						
परिवार संख्या परिवार में क्रम सं.	नाम पहली बार पहचान की तिथि आयु						
	वजन/पोषण स्थिति						
परिवार संख्या परिवार में क्रम सं.	नाम पहली बार पहचान की तिथि आयु						
	वजन/पोषण स्थिति						
परिवार संख्या परिवार में क्रम सं.	नाम पहली बार पहचान की तिथि आयु						

गृहभ्रमण के समय आयु अनुसार संदेशों की तालिका

क्र.सं.	सम्पर्क का समय	माता और परिवार के साथ चर्चा के बिन्दु/सन्देश
A	**4 से 6 माह की गर्भावस्था** – यह सम्पर्क आंगनवाड़ी केन्द्र या कहीं और हो सकते हैं	1. आयरन की गोली का सेवन, रक्त अल्पता के अनुसार गोलियों की संख्या 100 या 200 2. टी.टी. के दो टीके सुनिश्चित करना 3. टीकाकरण कार्ड एवं एम.सी.पी कार्ड का सुरक्षित रखना 4. अधिक भोजन करना, आयोडिन युक्त नमक का उपयोग 5. अधिक आराम करना : रात में 8 घण्टे और दिन में 2 घण्टे 6. प्रसव के लिए पैसे की बचत 7. आँगनवाड़ी केन्द्र से पूरक पोषाहार प्राप्त करना 8. पोषण एवं स्वास्थ्य दिवसों पर नियमित रूप से प्रसव पूर्व जाँच
B	**7 से 9 माह की गर्भावस्था** – इस दौरान कम से कम दो बार परिवार से मिलना होगा	1. यदि अब तक आयरन की गोलियों का पूरा सेवन न किया हो ओर टी.टी. के पूरे टीके न लिए हों तो उसे पूरा करना 2. टीकाकरण कार्ड एवं एम.सी.पी कार्ड का सुरक्षित रखना 3. अधिक भोजन करना, आयोडिन युक्त नमक का उपयोग 4. अधिक आराम करना : रात में 8 घण्टे और दिन में 2 घण्टे 5. प्रसव के लिए पैसे की बचत 6. पोषण एवं स्वास्थ्य दिवसों पर कम से कम तीन बार रक्तदाब के साथ प्रसव पूर्व जाँच कराना 7. परिवार द्वारा संस्थागत प्रसव योजना की तैयारी को सुनिश्चित करना (संस्थान का पता होना, पैसों की बचत, परिवहन का प्रबन्ध होना तथा साथ जाने के लिए उचित व्यक्ति का होना) 8. घर पर प्रसव के लिए सम्भावित तैयारी (प्रशिक्षित प्रसव कार्यकर्ता (SBA) का होना) 9. आपात स्थिति से निपटने की पूरी तैयारी (प्रसव संस्थान का पता होना, रक्तदान करने वाले का पता तथा फोन नं. पता होना) 10. नवजात शिशु के लिए निर्देश (तुरन्त एवं केवल स्तनपान, शिशु को तुरन्त पोंछना एवं लपेटना, नाल पर कुछ न लगाना) 11. परिवार नियोजन के लिए तैयारी करना (शिशु जन्म अन्तर के लिए, आईयूडी, नलबन्दी और नसबन्दी) सामान्यतः बहु गर्भावस्था की अन्तिम तिमाही में प्रसव हेतु अपने मायके जाती है। उसके जाने से पहले ये सुनिश्चित करें कि उसे आवश्यक सेवाऐं, सलाह एवं अद्यतन किया हुआ टीकाकरण कार्ड मिल गया है। घर पर सुरक्षित एवं स्वच्छ प्रसव की तैयारी, प्रसव उपरान्त माता की एवं नवजात शिशु की देखभाल एवं आपात स्थिति की तैयारी इसमें शामिल है।
C	**प्रसव का दिन** – यह सुनिश्चित करें कि इस दिन भेंट अवश्य हो। यदि संभव हो तो प्रसव वेदना प्रारंभ होने के समय से आपकी उपस्थिति होने से पूर्व निर्धारित योजना से प्रसव कराया जा सकेगा। स्वच्छता, शिशु को गर्माहट व तुरन्त स्तनपान। यदि प्रसव के समय उपस्थित होना संभव न हो पाए तो प्रसव के बाद जितनी जल्दी हो सके भेंट करें। अस्पताल में प्रसव होने की स्थिति में माता और शिशु के वापस घर आने पर जितनी जल्दी हो सके भेंट करें।	1. तुरन्त एवं केवल स्तनपान, अन्य कुछ और न दिया जाए 2. साफ सफाई व व्यक्तिगत स्वच्छता पर ध्यान दिया जाना जिससे संक्रमण को रोका जा सके, शिशु को कम से कम लोग हाथ लगाएं, हाथ धो कर शिशु को छूऐं, नाल की देखभाल करें 3. बीसीजी और ओ.पी.वी. (पोलियो) 4. माता में खतरे के लक्षणों जैसे अत्यधिक रक्तस्राव और बुखार की पहचान के लिए परामर्श 5. देखें की नवजात शिशु कमजोर तो नहीं है :– a. निर्धारित तिथि से तीन सप्ताह या अधिक समय पूर्व जन्म होना b. जन्म के समय वजन 2 किलो से कम होना c. जन्म के समय से ही स्तनपान करने में कमजोर होना 6. यदि शिशु कमजोर है तो आवश्यक सलाह दें जिससे सफाई गर्माहट एवं स्तनपान पर ज्यादा ध्यान दिया जाए तथा शिशु को माता के सीने से कंगारू की भांति लगाकर रखा जाए 7. नवजात शिशु में बीमारी के लक्षणों की तुरन्त पहचान जैसे स्तनपान स्फुर्ति से न करना, सामान्य गतिविधियों का कम होना, बदन ठंडा महसूस होना, ऐसी स्थिति में तुरन्त रेफर करें

गृहभ्रमण के समय आयु अनुसार संदेशों की तालिका

क्र.सं.	सम्पर्क का समय	माता और परिवार के साथ चर्चा के बिन्दु/सन्देश
D	**जन्म के बाद पहला सप्ताह** – जन्म के बाद पहले सप्ताह में कम से कम दो भेंट होनी चाहिए। यदि शिशु कमजोर है तो और अधिक भेंट करनी चाहिए	1. स्तनपान जारी रखना, गर्माहट एवं स्वच्छता के बारे में परामर्श 2. नवजात शिशु में बीमारी के लक्षणों की तुरन्त पहचान जैसे स्तनपान स्फुर्ति से न करना, सामान्य गतिविधियों का कम होना, ऐसी स्थिति में तुरन्त रेफर करें 3. माता में खतरे के लक्षणों जैसे बुखार, बदबुदार स्राव 4. कमजोर शिशुओं की देखभाल में सहायता करना : a. बार–बार भेंट करना, दिन में दो बार जब तक कि सामान्य रूप से स्तनपान प्रारंभ न हो जाए b. सफाई, गर्माहट एवं स्तनपान तथा पोंछने एवं लपेटने पर अधिक ध्यान देना। c. आवश्यकतानुसार स्तनों को निचोड़ कर दूध छोटे कटोरे में निकालकर पिलाना
E	**जन्म के बाद 8 से 30 दिन** – यदि शिशु कमजोर है तो बार–बार भेंट करना आवश्यक है अन्यथा तीन भेंट पर्याप्त है	1. स्तनपान जारी रखना, गर्माहट एवं स्वच्छता के बारे में परामर्श 2. नवजात शिशु में बीमारी के लक्षणों की तुरन्त पहचान तथा परामर्श (पहले जैसा) 3. स्तनपान में परेशानी की पहचान तथा प्रबन्धन 4. टीकाकरण 5. कमजोर शिशुओं की देखभाल में सहायता करना (पहले की तरह) 6. परिवार नियोजन, उपलब्ध साधनों के बारे में बताना एवं ए.एन.एम. से मिलने के लिए सुझाव देना
F	**1 से 5 माह की आयु के बीच** – जहां परिवार केवल स्तनपान एवं टीकाकरण के लिए तैयार नहीं है वहां अधिक भेंट करनी होगी	1. 6 माह तक केवल स्तनपान की सलाह देना और सहायता करना 2. टीकाकरण 3. आंगनवाड़ी केन्द्र में प्रति माह शिशु का वजन कराना 4. परिवार नियोजन, उपलब्ध साधनों के बारे में बताना एवं ए.एन.एम. से मिलने के लिए सुझाव देना 5. यदि कोई महिला कोई साधन अपना रही है तो उसकी उपलब्धता बनाए रखना 6. 6 माह के बाद अतिरिक्त भोजन देना
G	**6 से 8 माह की आयु के बीच** – माह में कम से कम एक भेंट आवश्यक है जिस दौरान शिशु को उपरी आहार खिलाने की पद्धतियों का जीवन्त प्रदर्शन किया जाना चाहिए साथ ही यदि कोई समस्या है तो उसका समाधान करना चाहिए	1. उपयुक्त ऊपरी आहार : a. बच्चे का खाना बनाने से पहले और बच्चे को भोजन कराने से पहले पानी और साबुन से हाथ धोना, धीरे–धीरे शुरूआत करना b. अर्धठोस आहार जैसे मसला हुआ चावल, खिचड़ी आदि खिलाना c. अलग कटोरी से खिलाना d. प्रतिदिन कम से कम दो तीन बार यानि 2 से 3 छोटी कटोरी अर्थात 200 ग्राम अर्धठोस आहार खिलाना e. खाने में घी या तेल मिलाना f. स्तनपान जारी रखना, विशेष रूप से रात के समय g. बच्चे की भूख और खाना खाने की तैयारी के इशारे को समझना तथा भोजन के समय शिशु के साथ बैठ कर भोजन कराना h. बीमारी के बाद खाने की मात्रा बढ़ाना 2. 9 माह पर खसरे का टीका एवं विटामिन–A की खुराक 3. आंगनवाड़ी केन्द्र में प्रति माह शिशु का वजन तथा अतिरिक्त भोजन कराना 4. ऐसे परिवारों की पहचान करना जिन्हें सहायता की विशेष आवश्यकता हो जैसे भोजन की कमी, लैंगिक असमानता, शिशु का सही रूप से ध्यान रख पाने में असमर्थ 5. परिवार नियोजन (उपलब्ध साधनों के बारे में बताना एवं एएनएम से मिलने के लिए सुझाव देना)
H	**9 से 24 माह की आयु के बीच** – 2 से 3 भेंट यह सुनिश्चित करने के लिए की उपरी आहार की मात्रा बढ़ाई जा रही है	1. 12 माह की आयु के बाद बच्चों के लिए आयरन की छोटी गोली का सेवन 2. निम्न बातों पर लगातार ध्यान देना :– a. उपयुक्त ऊपरी आहार, ध्यान दें की मात्रा दिन में 3 से 4 बार तक बढ़ाई गई है, जिससे शिशु को तीन छोटी कटोरी या 300 ग्राम तक आहार मिल रहा है और जो 18 माह की आयु होते तक 500 ग्राम तक बढ़ाया जाए b. बीमारी के बाद खाने की मात्रा बढ़ाना c. समय पर टीकाकरण पूरा करना एवं विटामिन–A 3. प्रति माह शिशु का वजन कराना 4. ऐसे परिवारों की पहचान करना जिन्हें सहायता की विशेष आवश्यकता हो जैसे भोजन की कमी, लैंगिक असमानता शिशु का सही रूप से ध्यान रख पाने में असमर्थ